बुद्धि (Intelligence)

मनुष्य का वह ऐच्छिक कर्म जिसका प्रभाव दूसरे मनुष्यों पर पड़ता है जैसे अच्छे कर्म का अच्छा प्रभाव तथा बुरे कर्म का बुरा प्रभाव पड़ता है और उसके द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर उचित व अनुचित का आंकलन किया जाता है, वहीं मानव का व्यवहार कहलाता है।

- **बुद्धि का शाब्दिक अर्थ– यह** लेटिन भाषा के 'Intelligere' से बना है।

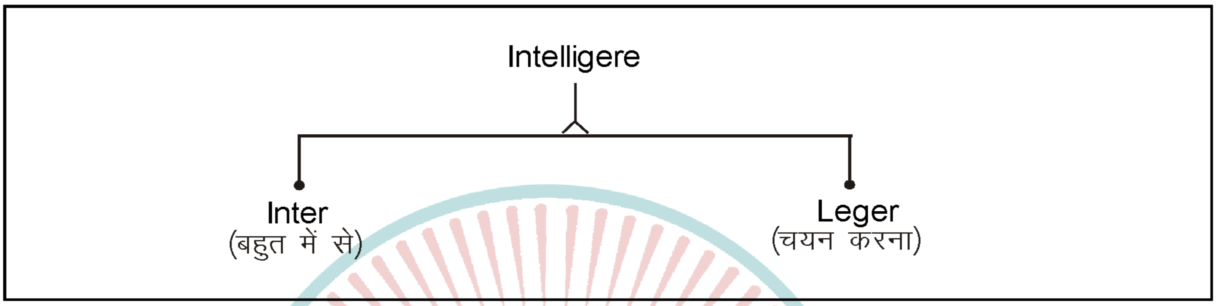

○ बुद्धि एक ऐसी क्रिया है जिसके तहत अनेक उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक विकल्प का चयन किया जाता है। बुद्धि एक अविभाज्य इकाई होती है जो कि सामान्य मानसिक क्रियाओं का एक संगठित रूप होती है, इस तंत्र के तहत व्यक्ति की सीखने की योग्यता, समस्या समाधान की योग्यता, समायोजन की योग्यता तथा अमूर्त चिंतन की योग्यता शामिल है। सामान्य बोल–चाल की भाषा में **स्मरण शक्ति (Memory) को बुद्धि** माना जाता है।

❑ **विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि की परिभाषाएँ :–**

1. **वुडवर्थ और मार्क्विस:**–बुद्धि का अर्थ 'प्रतिभा का प्रयोग करना' अर्थात् किसी स्थिति का सामना करने या किसी कार्य को करने के लिए प्रतिभात्मक योग्यताओं का प्रयोग बुद्धि है।
2. **टरमेन:**–'व्यक्ति जिस अनुपात में अमूर्त चिंतन करता है उसी अनुपात में वह बुद्धिमान कहलाता है।'
3. **स्टर्न:**–'जीवन की नई समस्याओं एवं स्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालने की सामान्य मानसिक योग्यता बुद्धि कहलाती हैं।'
4. **वैगनन:**–नई एवं परिवर्तित स्थितियों को समझने तथा उनके अनुसार समायोजित करने की योग्यता बुद्धि है।
5. **डैविड पेश्लर:**–बुद्धि व्यक्ति की वह संयुक्त और समग्र क्षमता है, जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, विवेकपूर्ण चिंतन करता है और अपने वातावरण का प्रभावशाली ढंग से सामना करता है।
6. **अल्फ्रेड बिने** – बुद्धि अच्छा निर्णय लेने अच्छा तर्क प्रस्तुत करने और अच्छा बोध (ज्ञान) करने की योग्यता है।
7. **ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार** – प्रत्यक्षण करने, सीखने, समझने व जानने की योग्यता ही बुद्धि है।

- **सर्वप्रथम वर्ष 1923 में बोरिंग** नामक मनोवैज्ञानिक ने बुद्धि की औपचारिक परिभाषा दी। उनके अनुसार–**'बुद्धि परीक्षण जो मापता है, वही बुद्धि है।'**

बुद्धि :

- सीखने की क्षमता।
- चिंतन करने की योग्यता।
- वातावरण में समायोजित होने की योग्यता।
- अमूर्त चिंतन की योग्यता।
- अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता।
- विभिन्न क्षमताओं का योग।
- जन्मजात शक्ति।
- समस्या समाधान करने की योग्यता।
- संबंधों को समझने की योग्यता।
- उद्देश्यपूर्ण क्रिया करने की योग्यता।
- अंतर करने की योग्यता।

बुद्धि मनुष्य की ऐसी योग्यता है जिसमें वह सीखने, समझने, अमूर्त चिंतन करने, वातावरण से समायोजन करने, उद्देश्यपूर्ण ढंग से काम करने तथा समस्याओं का समाधान करने में समर्थ एवं संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता बुद्धि है।

अतः कहा जा सकता है कि बुद्धि एक जन्मजात शक्ति है, जो जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के कार्य करती है।

बुद्धि की विशेषताएँ :

- बुद्धि, व्यक्ति की जन्मजात शक्ति है।
- बुद्धि, व्यक्ति को अमूर्त चिंतन की योग्यता प्रदान करती है।
- व्यक्ति को विभिन्न बातों को सीखने में सहायता देती है।
- व्यक्ति को अपने गत अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता देती है।
- व्यक्ति की कठिन परिस्थितियों और जटिल समस्याओं को सरल बनाती है।
- व्यक्ति को नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य करने का गुण प्रदान करती है।
- बुद्धि, व्यक्ति को भले और बुरे, सत्य और असत्य व नैतिक और अनैतिक कार्यों में अंतर करने की योग्यता देती है।
- बुद्धि पर वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

- प्रिंटर के अनुसार–बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरावस्था के मध्यकाल तक होता है।
- कोल एवं ब्रूस के अनुसार–लिंग भेद के कारण बालकों और बालिकाओं की बुद्धि में बहुत ही कम अंतर होता है।

❑ बुद्धि के दो प्रमुख निर्धारक तत्व :

1. आनुवांशिकता। 2. वातावरण (पारिवार, स्कूल इत्यादि)।

बुद्धि में निहित क्षमताएँ (भारतीय परंपरा के अनुसार)

संज्ञानात्मक क्षमता	सामाजिक क्षमता	सांवेगिक क्षमता	उद्यमी क्षमता
○ सोच–समझ ○ विभेदन क्षमता ○ समस्या समाधान योग्यता ○ प्रभावी संप्रेषण	○ सामाजिक व्यवस्था नियमों के प्रति सम्मान ○ सामाजिक समरसता ○ परामर्श चिंतन	○ संवेग परिपक्वता एवं नियंत्रण ○ आत्म मूल्यांकन ○ शिष्टता ○ अच्छा आचरण	○ प्रतिबद्धता ○ कठिन परिश्रम ○ धैर्य ○ लक्ष्य निर्धारित व्यवहार

❑ बुद्धि के प्रकार :

- बुद्धि वह क्षमता है जो परिस्थितियों व परिवेश (वातावरण) के अनुसार कार्य करती है। **'थार्नडाइक' ने बुद्धि के तीन प्रकारों** का उल्लेख किया है–

1. मूर्त बुद्धि (Tangible) 2. अमूर्त बुद्धि (Intangible) 3. सामाजिक बुद्धि (Social)

1. **मूर्त बुद्धि (Tangible Intelligence)** : इसे **यांत्रिक बुद्धि** या **गत्यात्मक बुद्धि** भी कहते हैं। यह वस्तुओं को समझने और उनके अनुसार कार्य करने के लिए उपयुक्त होती है। यह बुद्धि चिह्नों, अंकों व सूत्रों आदि को सुलझाती हैं। इसका संबंध यंत्रों और मशीनों से होता है। **उदाहरण–कारीगर (मिस्त्री), इंजीनियर, मैकेनिक** आदि।

2. **अमूर्त बुद्धि (Intangible Intelligence)** : इसका संबंध **पुस्तकीय ज्ञान** से है। यह सूक्ष्म तथा अमूर्त प्रश्नों को चिंतन तथा मनन के माध्यम से हल करती है। यह बुद्धि गणितीय सूत्रों को हल करने व साहित्यिक रचनाओं को सुंदर रूप से प्रस्तुत करने का कार्य करती है। **उदाहरण–डॉक्टर, वकील, चित्रकार, दार्शनिक, साहित्यकार** आदि।

3. **सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence)** : इस बुद्धि का संबंध सामाजिक अनुकूल की योग्यता से है। यह व्यक्ति की वह योग्यता है जो व्यक्ति को समाज में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। यह व्यक्ति को सामाजिक कार्यों में रुचि तथा समाज में मिलनसार बनाती है।**उदाहरण**–सामाजिक कार्यकर्त्ता, व्यवसायी, नेता आदि।

मनोवैज्ञानिक वर्नन के अनुसार बुद्धि 3 प्रकार की होती है–

जैविक बुद्धि (Biological Intelligence)	मनोवैज्ञानिक बुद्धि (Psychological Intelligence)	संक्रियात्मक बुद्धि (Oprative Intelligence)
जैविक बुद्धि जीवन की नई परिस्थितियों से जैविक रूप से अनुकूलन करने की योग्यता है।	जन्मजात ज्ञानात्मक योग्यता	ऐसी बुद्धि जो परीक्षणों द्वारा मापी जा सकती है।

- **स्टर्नबर्ग का त्रिचापीय सिद्धांत :** स्टर्नबर्ग ने मानव बुद्धि को अनुभव से सीखने, अच्छी तरह से तर्क करने, महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को याद करने तथा दैनिक जीवन की मांगों का सामना करने के लिए संज्ञानात्मक योग्यता के रूप में परिभाषित किया है। इसमें 3 प्रकार की बुद्धि होती है–

1. **घटकीय बुद्धि** – यह बुद्धि समस्या के घटकों को तोड़ने तथा समस्या समाधान के लिए चीजों का विश्लेषण करने से संबंधित है ये समस्या समाधान तथा अमूर्त तर्क में अच्छे होते है।

2. **आनुभाविक बुद्धि** – इनमें समस्या समाधान के लिये नए विचारों के साथ पूर्व ज्ञान व अनुभव का प्रयोग किया जाता है।

3. **सांदर्भिक बुद्धि** – दैनिक जीवन की परिस्थितियों को समझने तथा सफलतापूर्ण समाधान करने में सक्षम बनाती है।

संज्ञानात्मक बुद्धि

- **संज्ञानात्मक बुद्धिः**–व्यक्ति की वह मानसिक योग्यता जिसके द्वारा व्यक्ति चिंतन, ध्यान, स्मरण, निर्णय, भाषा–निपुणता, प्रत्यक्षीकरण व समस्या समाधान करता है। यहां संज्ञान से अभिप्राय जानना होता है। संज्ञानात्मक बुद्धि में मानव की विभिन्न मानसिक गतिविधियों का समन्वय होता है।

- किसी विषय के प्रति संवदेनशीलता, समझ, अंतर करने की योग्यता, अमूर्त चिंतन, प्रभावी सम्प्रेषण व समस्या समाधान करने की योग्यता को संज्ञानात्मक बुद्धि कहा जाता है।

- मनुष्य के ज्ञान प्राप्त करने, पढ़ने, सीखने, स्मरण करने अमूर्त चिंतन करने, अवधारणाओं का निर्माण करने, संश्लेषण एवं विश्लेषण करने की योग्यता, अंतर स्पष्ट करने, संवेदनशीलता की समझ, तार्किक निर्णय व विभेदन करने की योग्यता ही संज्ञानात्मक बुद्धि है।

❖ जीन पियाजे का संज्ञानात्मक बुद्धि विकास का सिद्धान्त :

- जीन पियाजे ने यह सिद्धान्त 1970 में दिया। पियाजे के अनुसार, बुद्धि एक ऐसी अनुकूलन संबंधी प्रक्रिया है जिसमें जैविक परिपक्वता का पारस्परिक प्रभाव और वातावरण के साथ होने वाली अंतः क्रिया दोनों ही सम्मिलित होती है। इनके अनुसार बौद्धिक विकास कुछ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, जैसे–प्रकृति के नियम को समझना, व्याकरण के नियम को समझना और गणितीय नियमों को समझना आदि के विकास पर निर्भर करता है।

- इन्होंने बच्चे के विकास का अध्ययन किया उनके अनुसार जैसे–जैसे बच्चे की उम्र बढ़ती है वैसे–वैसे उसका कार्यक्षेत्र भी बढ़ता जाता है तथा वैसे–वैसे बुद्धि का विकास भी होता है इसे संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत कहते है।

❖ पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की चार अवस्थाओं का वर्णन किया है। यह सभी अवस्थाएँ क्रमिक विकासात्मक अवस्थाएँ हैं–

1. **संवेदी क्रियात्मक अवस्था:** जन्म से 2 वर्ष तक। यह संज्ञान विकास की प्रथम अवस्था होती है। शिशु संवेदनाओं तथा पेशियों की गति से सीखता है। त्वचा, आँख व कान इस अवस्था में सबसे सक्रिय ज्ञानेंद्रियाँ। इस अवस्था में बालक में अनुकरण से भाषा विकास होता है। इस दौरान बच्चे में वस्तु स्थिरता (Object Permanance) की योग्यता विकसित हो जाती है।

2. **प्राक्–प्रचलनात्मक अवस्था** : 2 से 7 वर्ष तक। इस अवस्था में बच्चे में निम्न योग्यता विकसित होती है– चिह्न समझना, आत्मकेन्द्रिता, जीववाद। इस अवस्था में बालक परिवार का सक्रिय सदस्य बन जाता है। कई प्रकार की मानसिक क्रियाएँ प्रत्ययों के आधार पर करने लगता है। इस अवस्था में बच्चा दूसरों के सम्पर्क में आकर ज्ञान अर्जित करने लग जाता है इस अवस्था में बच्चा भाषा, खेल, चित्रकारी आदि क्षेत्रों में स्वयं को आगे बढ़ाता है।

3. **मूर्त प्रचलनात्मक अवस्था** : 7 से 11 वर्ष तक। इस अवस्था में बालक मूर्त संक्रियाएं यथा चिंतन करना, गणितीय संक्रियाएं, आकृतियों को पहचानना व रंगों को पहचानने आदि का ज्ञान हो जाता है। इस अवस्था में बालक का विकास स्थूल से सूक्ष्म की ओर होने लगता है।

4. **औपचारिक प्रचलनात्मक अवस्था :** 11 से 15 वर्ष तक। इस अवस्था में बालक पूर्ण रूप से तार्किक चिंतन करने लगता है। यह मानसिक विकास की परिपक्वता अवस्था है। अमूर्त बातें समझने लगता है। इस अवस्था में व्यक्ति में परिकल्पना बनाने, उनकी व्याख्या करने एवं उनके निष्कर्ष प्राप्त करने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है। पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास मात्रात्मक प्रक्रिया के बजाय गुणात्मक प्रक्रिया होता है।

सामाजिक बुद्धि :

- **सामाजिक बुद्धिः** सामाजिक बुद्धि सिद्धान्त **थार्नडाइक** ने दिया। थार्नडाइक के अनुसार – सामाजिक बुद्धि का आशय पुरुषों तथा महिलाओं को समझने तथा उचित व्यवहार करने से है ताकि मानव संबधों की दृष्टि से बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार किया जा सके।

- **मॉस एवं हण्ट :–** अन्य लोगों के साथ समन्वय स्थापित करना।
- जटिल सामाजिक संबंधों व सामाजिक पर्यावरण को प्रभावी रूप से समझने व उनके अनुरूप सही प्रतिक्रिया करने की योग्यता/क्षमता सामाजिक बुद्धि है।
- ऐसी बुद्धि व्यक्ति को जीवन में व्यावहारिक सफलता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- सामाजिक बुद्धि से परिपूर्ण व्यक्ति सामाजिक रूप से सशक्त, प्रभावपूर्ण व्यवहार, अच्छा आचरण करने वाला, मिल–जुलकर कार्य करने वाला व जीवन में व्यावहारिक रूप से सफल होता है। अतः समस्त सामाजिक संबंधों को समझना व उनके प्रति उचित प्रतिक्रिया ही सामाजिक बुद्धि है।
- सामाजिक संबंधों को समझने, बड़े–बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों, मित्रों और समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति समुचित व्यवहार करने, सामाजिक परिस्थितियों के साथ प्रभावपूर्ण समायोजन करने तथा सामाजिक मुद्दों एवं समस्याओं का सहयोगपूर्ण सकारात्मक समाधान निकालने की योग्यता ही सामाजिक बुद्धि है।
- समाजसेवी, अच्छे राजनेता व सिविल सोसायटी के सदस्य आदि में ऐसी बुद्धि अधिक पाई जाती है।
- सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान, अपनों से बड़ों, छोटो तथा वंचितों के प्रति प्रतिबद्धता, दूसरे व्यक्तियों के विचारों का सम्मान तथा दूसरों की चिंता करने की योग्यता ही सामाजिक बुद्धि कहलाती है। **उदाहरण** – संबंधों में समस्या आने पर संबंध समाप्ति के स्थान पर सकारात्मक समाधान योजना। किसी व्यक्ति को उसके कार्य का उचित फीडबैक देना।
- इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारकों को शामिल किया जाता है–

1. सामाजिक नियमों तथा रीति–रिवाजों का ज्ञान।
2. स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता।
3. सुनने की क्षमता व कौशल।
4. अन्य व्यक्तियों के व्यवहार तथा संवेग को समझने की क्षमता तथा उन व्यक्तियों का सम्मान।

❑ सामाजिक बुद्धि के घटक (SPACE मॉडल):

कार्ल अल्बर्ट ने SPACE मॉडल द्वारा सामाजिक बुद्धिमता के घटक बताए गए है जो निम्न है–

S = **सामाजिक जागरूकता** (Social Awareness) – स्थितियों को समझने तथा उस स्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिए यह जानने की क्षमता है।

P = **उपस्थिति** (Presence) – किसी के आत्मक का बाहरी बोध ही उपस्थिति है जैसे आत्मविश्वास।

A = **प्रामाणिकता** (Authenticity) – यह किसी में व्यवहार करने का एक तरीका है जो इस धारणा को जन्म देता है कि व्यक्ति स्वयं तथा दूसरों प्रति ईमानदार है।

C = **स्पष्टता** (Clarity) – कोई व्यक्ति अपने व्यवहार को स्पष्ट प्रभावी तथा कुशलता से व्यक्त करने में सक्षम है।

E = **परानुभूति** (Empathy) – दूसरों को समझने, उनकी परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता रखने तथा सहयोग करने की भावना है।

सामाजिक बुद्धि का अनुक्रमिक मॉडल

सामाजिक संवेदनशीलता
↓
सामाजिक सूझ
↓
सामाजिक सम्प्रेषण

1. **सामाजिक संवेदनशीलता**–इसका आशय परस्पर बातचीत में संवेदनशीलता तथा सामाजिक परिस्थितियों के बारे में संगत अनुमान लगाने से है।

2. **सामाजिक सूझ**–इसका आशय सामाजिक समझ, सूझबूझ तथा उचित अनुचित में अंतर स्थापित करके यथोचित व्यवहर करने की योग्यता से है।

3. **सामाजिक सम्प्रेषण**–सामाजिक परिस्थितियों को समझना उचित व्यवहार करना एवं समस्याओं के समाधान में कौशलपूर्ण प्रदर्शन करना आदि सामाजिक सम्प्रेषण में सम्मिलित है।

○ **सामाजिक बुद्धि** $\dfrac{\text{सामाजिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$

संवेगात्मक/भावनात्मक बुद्धि

- संवेग शब्द अंग्रेजी भाषा के **Emotional** से बना है। Emotional शब्द लैटिन भाषा के **"Emovere"** से बना है। जिसका अर्थ सामाजिक संवेदनशलीत व मानसिक रूप से विचलन व उत्तेजित करने की दशा उत्पन्न करना है। इस प्रकार **Emotional** शब्द क्रांति उत्पन्न करने के अर्थ में भी लिया जाता है।
- संवेग मूल प्रवृत्ति से संबंधित है और **विलियम मैक्डूगल ने 14 मूल** प्रवृत्ति व उनके **14 संवेग** बताये हैं। जैसे – भय, क्रोध, घृणा, आश्चर्य व कामुकता आदि। वुडवर्थ के अनुसार संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है। संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य व्यक्ति की उस समग्र क्षमता से है जो व्यक्ति को सही समय, स्थान व उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपने एवं दूसरे व्यक्तियों के संवेगों को नियंत्रित व प्रबंधित करते हुए व्यवहार करना सीखाती है।

❖ **संवेगात्मक बुद्धि** : यह सिद्धांत पीटर सेलोवी व जार्ज मेयर द्वारा दिया गया। 1997 में प्रकाशित पुस्तक 'What is Emotional Intelligence' के माध्यम से इन्होंने यह सिद्धांत दिया।

पीटर सेलोवी व मेयर के अनुसार : स्वयं के संवेगों को समझना, दूसरे के संवेगों को समझना, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण करना व संवेगों के साथ व्यवहार करने की योग्यता को संवेगात्मक भावनात्मक बुद्धि कहते हैं। के.वी.पेट्राइड के अनुसार E.I. एक गुण है जिसे सीखा नहीं जा सकता, यह गुण जन्मजात है।

फ्रीमैन के अनुसार : हम क्या सोचते है, क्या महसूस करते है और क्या करना चाहते है, इस बारे में विचारने का तरीका ही संवेगात्मक बुद्धि है। 1995 में संवेगात्मक बुद्धि पर डेनियन गोलमैन द्वारा एक पुस्तक 'सांवेगिक बुद्धि' प्रकाशित की गई। इस पुस्तक में गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि के प्रत्यय को विस्तार से प्रस्तुत किया।

$$\text{संवेगात्मक बुद्धि} = \frac{\text{संवेगात्मक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

- गोलमैन के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि एक योग्यता है जिससे हम अपने स्वयं के तथा दूसरे व्यक्तियों के भावनाओं की पहचान करते है।
- **गोलमेन (1955) के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के प्रमुख पाँच घटक निम्नलिखित है–**

1. आत्मजागरूकता – आत्मचेतना/स्वयं के संवेगों को जानना।
2. आत्मनियंत्रण – स्वयं के संवेगों का प्रबंधन।
3. आत्मअभिप्रेरणा – स्वयं को अभिप्रेरित करना।
4. परानुभूति – समानुभूति अन्य लोगों के संवेगों को पहचानना।
5. सामाजिक दक्षता – कौशल/ संबंधों का निर्वाह।

- गोलमैन ने कहा कि व्यक्ति की सफलताओं में 80 प्रतिशत योगदान संवेगात्मक तथा 20 प्रतिशत संज्ञानात्मक बुद्धि का होता है।

○ मेयर एवं पीटर सैलोवी द्वारा संवैगात्मक बुद्धि के 4 घटक :

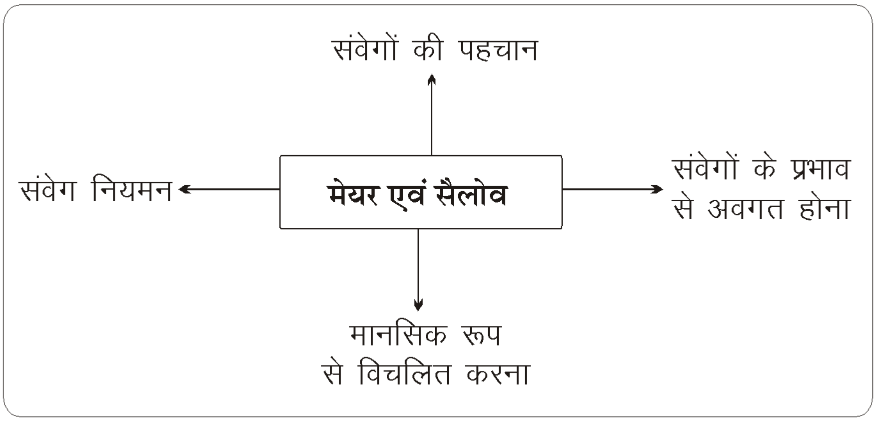

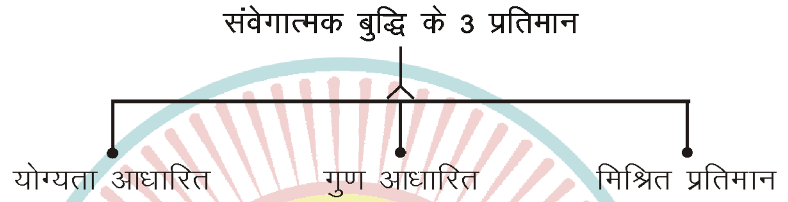

○ सांवेगिक बुद्धि वाले व्यक्तियों की विशेषताएँ :–

1. अपनी भावनाओं और संवेगों को जानना और उसके प्रति संवदेनशील होना।
2. अपने संवेगों को अपने विचारों से संबद्ध करना ताकि समस्या समाधान व निर्णय करते समय उन्हें ध्यान में रखा जा सके।
3. दूसरे व्यक्तियों के विभिन्न संवेगों को उनकी शारीरिक भाषा, आवाज और स्वरक (Vocal), आनन (Facial) अभिव्यक्तियों पर ध्यान देते हुए जानना और उसके प्रति संवदेनशील होना।
4. अपने संवेगों की प्रकृति और तीव्रता के शक्तिशाली प्रभाव को समझना।
5. अपने संवेगों और अपनी अभिव्यक्तियों को दूसरों से व्यवहार करते समय नियंत्रित करना ताकि शांति और सामंजस्य की प्राप्ति हो सके।

❖ जीवन में संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता :

1. तनाव प्रबंधन।
2. संवेग प्रबंधन।
3. समय प्रबंधन।
4. विषय परिस्थितियों में धैर्य रखने में सहायक।
5. टीमवर्क।
6. आत्म नियंत्रण।
7. आत्म अभिप्रेरणा।
8. परानुभूति की भावना बढ़ाने में।

❖ **प्रशासन में सांवेगिक बुद्धि की उपयोगिता के प्रमुख घटक :**

1. स्व–विश्वास का निर्माण।
2. निर्णय क्षमता का विकास।
3. सम्प्रेषण क्षमता का विकास।
4. नेतृत्व क्षमता का विकास।
5. कर्त्तव्य सर्वोपरि।

❖ **संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने के उपाय :**

1. सफल लोगों की जीवनी प्रेरक–प्रसंग, पंचतंत्र की कहानियों का अध्ययन करना।
2. व्यक्ति का स्वयं का आत्म मूल्यांकन करना।
3. ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर पूछा जाए कि आप ऐसे में क्या निर्णय लेंगे।
4. विवादास्पद एवं संवेदनशील मुद्दों पर बोलने से पहले सोचना।
5. संवेगों की अभिव्यक्तियों में सावधानी बरतना।
6. मस्तिष्क व संवेगों के मध्य तालमेल स्थापित करना।
7. किसी को धैर्यपूर्वक सुनना।
8. बालकों के पाठ्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करना।

सांस्कृतिक बुद्धि

- सांस्कृतिक बुद्धि से तात्पर्य उस योग्यता से है जिसमें व्यक्ति अपनी संस्कृति व समाज के दूसरे वर्गों की संस्कृति में सामंजस्य रख पाता है ताकि किसी की भावना को ठेस ना पहुँचे। सांस्कृतिक बुद्धि की प्रशासन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। क्योंकि प्रशासक सभी संस्कृतियों का सम्मान करते हुए आदर्श निर्णय अपनी सांस्कृतिक बुद्धि से ही ले सकता है। विभिन्न संस्कृतियों को तवज्जों देते हुए पर्यावरणीय मांग के अनुसार रीति–रिवाजों व विश्वासों पर खरा उतरने की योग्यता ही सांस्कृतिक बुद्धि है।
- सांस्कृतिक मानको, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, विश्वासों, जीवनशैली, कला, साहित्य, धर्म और दर्शन आदि की समझ और उनसे अनुकूलन और समायोजन की क्षमता/योग्यता ही सांस्कृतिक बुद्धि है। नेताओं, प्रबंधकों और अधिकारियों का प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने के लिए सांस्कृतिक बुद्धि की आवश्यकता होती है।
- **स्टर्नबर्ग के अनुसार** – बुद्धि संस्कृति का उत्पाद है क्योंकि बुद्धि का विकास एवं व्यक्ति का व्यवहार संस्कृति के मूलभूत अवयवों से प्रेरित एवं संचालित होता है।
- **भारतीय परम्परा में सांस्कृतिक बुद्धि–** यह सामाजिक एवं वैश्विक पर्यावरण से जुड़ाव पर बल देती है। वसुधैव कुटुम्बकम एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः भारतीय परम्परा का हिस्सा है इसे **अतः समाकलित बुद्धि** भी कहते है।

❖ सांस्कृतिक बुद्धि के घटक :

1. **अभिप्रेरणा** – यह घटक अन्य संस्कृतियों को जानने के लिए आंतरिक रुचि, बाह्य रुचि तथा आत्मविश्वास पर जोर देता है। इससे विभिन्न लोगों से बातचीत करना विभिन्न पहलुओं को जानना तथा समझने की इच्छा शामिल होती है।
2. **संज्ञानात्मक** – इसे सीक्यूज्ञान भी कहा जाता है। यह एक व्यक्ति का ज्ञान है कि सांस्कृतियाँ कैसे समान व कैसे अलग है। इसके अन्तर्गत अन्य मानदंडों का ज्ञान, कानूनी व आर्थिक प्रणाली का ज्ञान शामिल है।
3. **परासंज्ञान** – इसे सीक्यू रणनीति कहा जाता है। यह अंतर सामाजिक जागरूकता को संदर्भित करता है।
4. **व्यवहार** – यह व्यक्ति को विभिन्न संस्कृतियों के लिए उपयुक्त बनाने में सहायक है।

❖ सांस्कृतिक बुद्धि का महत्व :

- राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा।
- शहरीकरण के समय में मेट्रो शहरों में समायोजित करने की जरूरत व क्षमता के विकास में सहायक।
- तेज गति से होने वाले सांस्कृतिक बदलावों के मध्यनजर व्यक्ति के व्यवहार को प्रासंगिक बनाए रखने में मददगार होती है।
- सांस्कृतिक असहिष्णुता को नियंत्रित एवं प्रबंधित करना।
- पूर्वाग्रहों के प्रभाव को समाप्त करना।
- प्रभावी निर्णयन में सहयोग करना।
- सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करना तथा प्रभावी नेतृत्त्व को बढ़ाना।

पश्चिमी देशों व गैर–पश्चिमी देशों के लोगों की सांस्कृतिक बुद्धि में अंतर	
पश्चिमी देशों की सांस्कृतिक बुद्धि	**गैर पश्चिमी देशों की सांस्कृतिक बुद्धि**
1. ये लोग लक्ष्य, निष्पादन एवं उपलब्धियों पर अधिक बल देते है। 2. यह लोग तार्किकता व व्यक्तिगत उपलब्धियों में विश्वास रखते है। 3. यह लोग मानसिक प्रसंस्करण की गति पर जोर देते है।	1. यह लोग सामाजिक संबंध व संज्ञानात्मक क्षमता पर बल देते है। 2. यह लोग समाज की सामूहिक उपलब्धियों पर बल देते है। 3. यह लोग तेज गति के कार्य की गुणवत्ता के प्रति शंकालु होते है, गति की बाजाय गहराई पर बल देते है।

आध्यात्मिक बुद्धि

- यह सिद्धांत दनाह जोहर व ईयान मार्शल द्वारा प्रतिपादित किया गया। यह बुद्धि का उच्चतर आयाम या उच्चतर स्थिति है जिसमें आत्मज्ञान और आत्मचेतन का बोध होने के साथ–साथ दया, प्रेम, शांति, पवित्रता, विनम्रता, सर्वांगीणता, सृजनात्मकता के साथ आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति की योग्यता को इंगित करता है। किसी व्यक्ति द्वारा जीवन में सामाजिक रूप से सार्थक उद्देश्य रखने तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता होने से है। यह बुद्धि रखने वाले व्यक्ति अपने कार्यों तथा निष्पादन में मानवता को प्रमुखता देते है, ये व्यक्ति मानवता को बेहतर बनाने तथा उसे सही दिशा में निर्देशित करने का कार्य करते है।

❖ **आध्यात्मिक बुद्धि के गुण/तत्व :**

- यह मानवतावादी दृष्टिकोण है।
- प्रकृति व प्राकृतिक घटकों के प्रति सम्मान का भाव पाया जाता है।
- मानवता के प्रति वृहद् दृष्टिकोण जिसमें समुचित ब्रह्मांड को एक मानते हुए निर्णय लेना शामिल है।
- इसमें करुणा, दया भाव आदि निहित है।
- विविधता के प्रति आदर व संरक्षण की प्रतिबद्धता।
- शांति व पवित्रता पर आधारित है।
- आध्यात्मिक मुद्दों को समझने की योग्यता, आध्यात्मिक परिचर्चा में भाग लेने की योग्यता, परमतत्त्व के आत्म साक्षात्कार की उत्सुकता, समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान निकालने की योग्यता आध्यात्मिक बुद्धि से संबंधित है।
- **उदाहरण** – महात्मा बुद्ध, संन्यासी व धार्मिक व्यक्ति।

❖ **आध्यात्मिक बुद्धि का महत्व :**

- यह दूसरों के लिए समभाव विकसित करने में सहायक।
- मन के द्वन्द्वों एवं कुंठाओं को समाप्त करने में सहायक।
- संकल्पशक्ति को दृढ़ बनाये रखने में सहायक।
- व्यक्ति के व्यक्तित्व में सकारात्मक रूपान्तरण करने में सहायक।
- यह व्यक्तियों को सत्य की राहों पर चलने के लिए प्रेरित करता है।
- व्यक्ति के मन की एकाग्रता को बढ़ाता है।
- स्वचेतना को जाग्रत करने में सहायक है।

प्रज्ञान

बुद्धि–लब्धि

- जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न ने सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया था। स्टर्न ने अनुभव किया कि यदि कोई 6 वर्ष की उम्र का बच्चा 8 वर्ष की उम्र के बच्चे के समान कार्य करता है तो वह अपनी आयु के अधिकतम बच्चों से अधिक बुद्धिमान होगा। उन्होंने व्यक्ति के मानसिक विकास को मापने के लिये मानसिक आयु/वास्तविक आयु अनुपात निर्मित किया तथा उसे बुद्धि–लब्धि (I.Q.) की संज्ञा प्रदान की। इन्होंने दशमलव अनुपात को दूर करने के लिये अनुपात को 100 गुणा करने का नियम बनाया।

- I.Q. निकालने का सूत्र :

$$\text{बुद्धि लब्धि } (I.Q.) = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100 \text{ अर्थात } = \frac{M.A.}{C.A.} \times 100$$

❖ **बुद्धि–लब्धि का वर्गीकरण :**

- स्टर्न द्वारा दिये गये बुद्धि–लब्धि के सूत्र का उपयोग करते हुए टरमैन ने अपने बुद्धि परीक्षणों के अध्ययन के लिए बहुत से वयस्कों की (विभिन्न आयु वर्गों के) की बुद्धि परीक्षा ली। उन्होंने पाया कि बुद्धि की दृष्टि से वयस्क व्यक्तियों एवं बच्चों में बहुत अधिक भिन्नताएँ पाई जाती है। यदि इन भिन्नताओं का अवलोकन किया जाए तो व्यक्तियों को उनकी बुद्धि–लब्धि के अनुसार विभिन्न बुद्धि समूहों में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें उन्हें औसत से कम, अधिक बुद्धिमान या जड़बुद्धि बताया जा सके।

- इस प्रकार के वर्गीकरण से बुद्धि की दृष्टि से वैयक्तिक अंतरों को समझने में सहायता मिल सकती है, मनोवैज्ञानिक टरमैन के अनुसार यह निम्नलिखित प्रकार का हो सकता है।

बुद्धि लब्धि (I.Q.)	**बुद्धिमत्ता का स्तर (Level of Intelligence)**
140 और उससे ऊपर	प्रतिभाशाली (Gifted of Genious)
120 – 140	बहुत अधिक या प्रखर बुद्धि वाला (Very Superior)
110 – 120	सामान्य या औसत से अधिक बुद्धि वाला (Superior)
90 – 110	औसत या सामान्य बुद्धि वाला (Normal or Average)
75–90	सीमा पर और अल्पबुद्धि (Border Lined and Dull)
50–75	मूर्ख (Morons)
25–50	मूढ़ (Imbecile)
25 से कम	महामूर्ख या जड़–बुद्धि (Idiot)

❖ प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धांत :

- बुद्धि से संबंधित प्राथमिक मानसिक योग्यताओं के सिद्धांत का प्रतिपादन लुईस थर्सटन ने किया है इसे **'समूह तत्व सिद्धांत'** भी कहा जाता है। बुद्धि के अंतर्गत 7 प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ होती है जो एक–दूसरे से अपेक्षाकृत स्वतंत्र होकर कार्य करती है जो इस प्रकार है–

1. प्रेक्षण योग्यता।
2. अंक योग्यता।
3. शाब्दिक योग्यता।
4. वाक् योग्यता।
5. तार्किक योग्यता।
6. स्मरण योग्यता।
7. पर्यवेक्षण योग्यता।

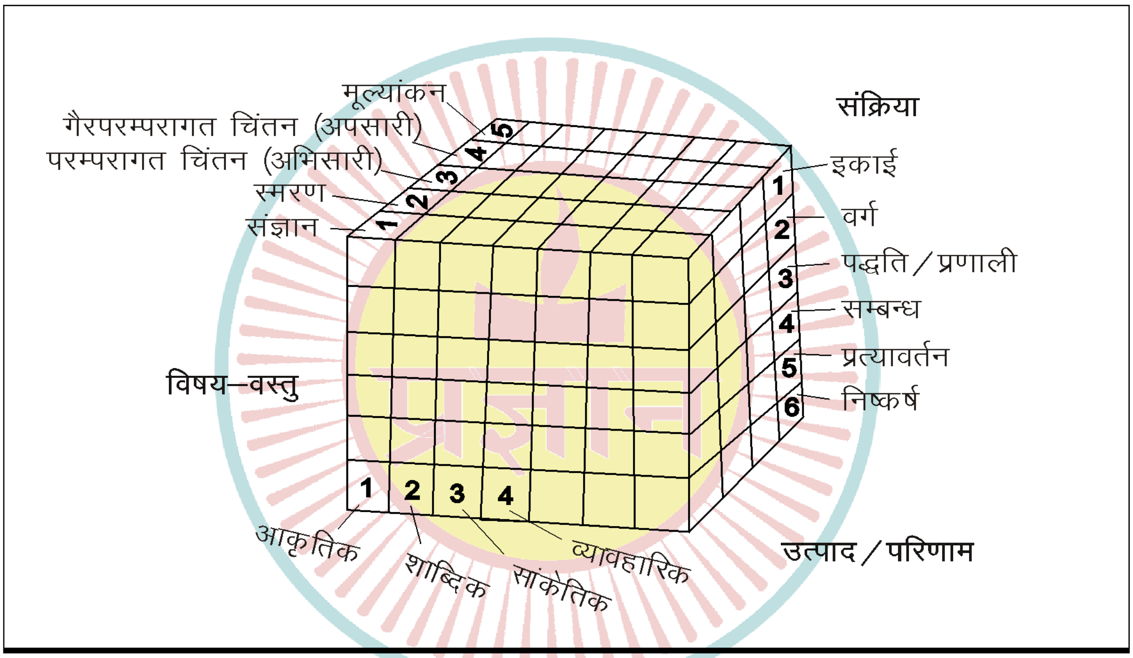

❖ बुद्धि पर पर्यावरण एवं आनुवंशिकता का प्रभाव :

- बुद्धि पर आनुवंशिकता के प्रभाव के संबंध में यह तथ्य है कि साथ–साथ पाले गए जुड़वाँ बच्चों की बुद्धि में 0.90 का सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- वहीं अलग–अलग पाले गए जुड़वाँ बच्चों की बुद्धि में 0.72 का सहसम्बन्ध पाया जाता है। बच्चों की बुद्धि गोद लेने वाले माता–पिता की अपेक्षा जन्म देने वाले माता–पिता के अधिक समान होती है।
- बुद्धि पर पर्यावरण के प्रभाव की बात करे तो जैसे–जैसे बच्चों की आयु बढ़ती है तो बच्चों की बुद्धि गोद लेने वाले माता–पिता की बुद्धि के स्तर के निकट पहुँच जाती है, प्रचुर पोषण, गुणवत्ता युक्त शिक्षा, अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि के वातावरण से बुद्धि का अच्छा विकास होता है।

बुद्धि के प्रमुख सिद्धांत

❖ **एक कारक सिद्धांत :** अल्फ्रेड बिने के अनुसार बुद्धि वह शक्ति है जो समस्त मानसिक कार्यों को प्रभावित करती है।

❖ **दो कारक सिद्धांत :** यह सिद्धांत चार्ल्स स्पीयरमैन ने दिया।

1. **सामान्य कारक** – वे मानसिक क्रियाएँ जो प्राथमिक है और उनका प्रभाव सभी प्रकार के कार्यों के निष्पादन पर पड़ता है।

2. **विशिष्ट कारक** – विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित विशिष्ट योग्यता को इसमें शामिल किया जाता है। जैसे–गायक, खिलाड़ी। व्यक्ति में जिस विशिष्ट तत्व की अधिकता होती है वह उसी में निपुण हो जाता है। इन तत्वों को अर्जित किया जाता है।

❖ **बुद्धि का त्रि–आयामी /बुद्धि संरचना का सिद्धान्त :** इस सिद्धान्त का प्रतिपादन जे.पी. गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों ने किया। गिलफोर्ड ने 1967 में एक डिब्बे के आकार का एक मॉडल प्रस्तुत किया जिसे 'बुद्धि संरचना मॉडल' कहते हैं। इस मॉडल के अन्तर्गत $4 \times 5 \times 6 = 120$ कोष/कारक बनाये गये। गिलफोर्ड के अनुसार मानसिक योग्यता प्रमुख रूप से तीन तत्वों से निर्मित हैं–

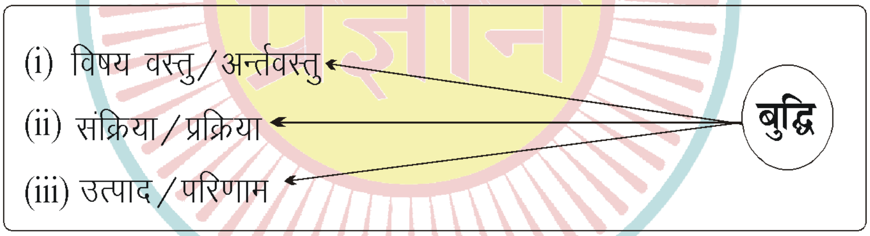

1. **विषय वस्तु**–किसी समस्या का समाधान करने के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती है, उसे विषय–वस्तु कहा जाता है। विषय वस्तु 4 प्रकार की होती है–

i. आकृतिक ii. शाब्दिक iii. सांकेतिक
iv. व्यावहारिक।

2. **संक्रिया**–समस्या समाधान हेतु विषय–वस्तु के साथ जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, उसे ही संक्रिया कहा जाता है। संक्रिया 5 प्रकार की होती है– i. संज्ञान ii. स्मरण iii. परम्परागत चिंतन iv. गैरपरम्परागत चिंतन v. मूल्यांकन।

3. **उत्पाद/परिणाम**–समस्या समाधान जिस रूप में निकलकर सामने आता है उसे, उत्पाद या परिणाम कहा जाता है। परिणाम 6 प्रकार का होता है–

i. इकाई ii. वर्ग iii. पद्धति
iv. संबंध v. प्रत्यावर्तन vi. निष्कर्ष।

❖ **बहुबुद्धि सिद्धांत :** हावर्ड गार्डनर ने यह सिद्धांत दिया। इनकी पुस्तक 'Frames of Mind (1983)' में इस बुद्धि के बारे में बताया। इनके अनुसार बुद्धि कोई तत्त्व नहीं है बल्कि भिन्न–भिन्न प्रकार की बुद्धियों से समावेशित है। किसी समस्या का समाधान खोजने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की बुद्धियाँ आपस में अन्तः क्रिया करते हुए साथ–साथ कार्य करती है। गार्डनर ने इसके 3 प्रकार बताएँ लेकिन वर्तमान में 9 प्रकार है–

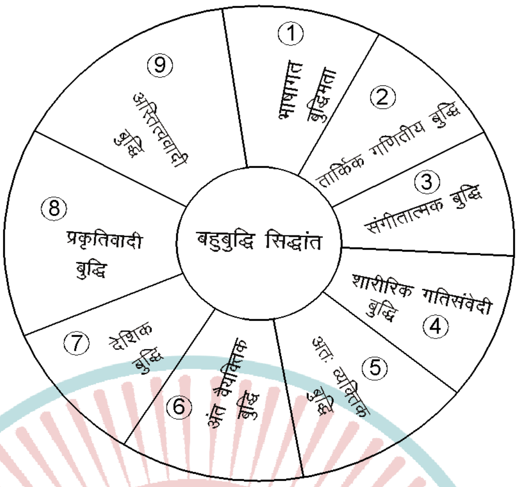

1. **भाषागत बुद्धिमता :** अपने विचारों को प्रकट करने तथा दूसरे व्यक्तियों के विचारों को समझना ही भाषागत बुद्धिमता कहलाती है। इसमें प्रवाह व नम्यता के साथ भाषा का उपयोग करने की क्षमता पाई जाती है। स्पष्ट व परिशुद्ध भाषा का उपयोग किया जाता है। **उदाहरण** – लेखक, कवि, पत्रकार व अनुवादक।

2. **तार्किक–गणितीय बुद्धि :** इस बुद्धि में वैज्ञानिक चिंतन व समस्या समाधान का कौशल पाया जाता है। व्यक्ति जिज्ञासु व तार्किक प्रकृति का होता है। **उदाहरण** – वैज्ञानिक ।

3. **संगीतात्मक बुद्धि :** संगीत के सुर, लय व ताल के प्रति संवेदना पाई जाती है। इस बुद्धि में अच्छे संगीत की परख व संगीत निर्माण की योग्यता पाई जाती है। **उदाहरण : गायक, संगीतकार।**

4. **शारीरिक–गतिसंवेदी बुद्धि :** यह बुद्धि व्यक्तिगत उद्देश्यों व लक्ष्यों के कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाने में मदद करने के साथ किसी के शरीर को बड़ी सटीकता से उपयोग करने की क्षमता। **उदाहरण** – खिलाड़ी, अभिनेता, नृतक आदि।

5. **अंतः व्यक्तिक बुद्धि :** अपनी निजी भावनाओं, अभिप्रेरणाओं, इच्छाओं, उद्देश्यों, शक्तियों और कमजोरियों का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों में ऐसी बुद्धि पाई जाती है। इस बुद्धि से युक्त व्यक्ति अपनी पहचान, मानव अस्तित्त्व व जीवन के अर्थों को समझने हेतु जिज्ञासु होते है। **उदाहरण :** दार्शनिक, आध्यात्मिक संत।

6. **अंतर्वेयक्तिक बुद्धि :** वह बुद्धि जो दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों के प्रति संवेदनशील रहती है। इस बुद्धि से युक्त व्यक्ति अपनी अभिप्रेरणाओं, उद्देश्यों, भावनाओं व व्यवहारों का सही बोध करते हुए उनके साथ मधुर संबंध स्थापित करते है। **उदाहरण** – राजनेता, धार्मिक नेता आदि।

7. **देशिक बुद्धि** : इस बुद्धि में दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण का कौशल, मानसिक बिंबो का निर्माण व उनका उपयोग तथा उनको मानसिक धरातल पर परिमार्जन करने की योग्यता ही देशिक बुद्धि है। **उदाहरण** – चित्रकार, फिल्म निर्देशक, मूर्तिकार आदि।

8. **प्रकृतिवादी बुद्धि** : पर्यावरण के प्राकृतिक पक्ष की विशेषताओं के प्रति संवेदनशीलता विभिन्न पशु–पक्षियों, वनस्पतियों के सौंदर्य का बोध करने में तथा प्राकृतिक पर्यावरण में सूक्ष्म विभेद करने में यह बुद्धि सहायक है। **उदाहरण** – किसान, पर्यटक, प्राणिविज्ञानी आदि।

9. **अस्तित्ववादी बुद्धि** : इस बुद्धि से युक्त मनुष्य संसार के बारे मे छिपे रहस्यों जैसे–जीवन, मृत्यु, मोक्ष आदि की वास्तविकता के बारे में जानने की क्षमता रखता है। **उदाहरण** – दार्शनिक, संत।

❖ **बर्ट एवं वर्नन का पदानुक्रमित बुद्धि सिद्धांत** : मनोवैज्ञानिक बर्ट एवं वर्नन ने इस सिद्धांत को प्रतिपादित किया। उन्होंने मानसिक योग्यताओं को उनके महत्व के अनुसार 4 स्तर दिए है जो निम्न है–

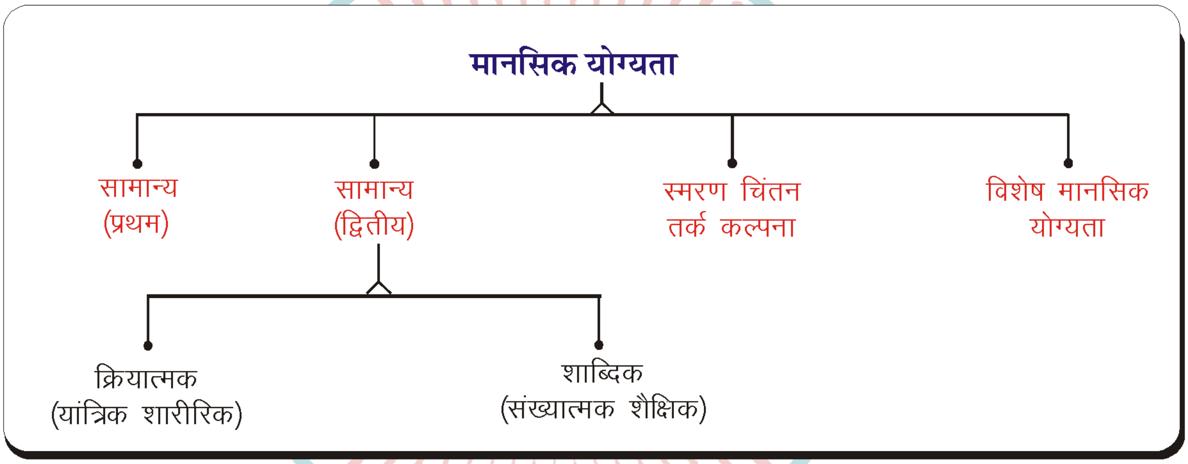

❖ **कैटल का बुद्धि सिद्धांत** : मनोवैज्ञानिक रेमंड वी. कैटल (1971) ने 2 प्रकार की सामान्य बुद्धि का वर्णन किया है। ये हैं– फ्लूड तथा क्रिस्टलाइज्ड योग्यता।

फ्लूड सामान्य योग्यता	**क्रिस्टलाइज्ड योग्यता**
यह वंशानुक्रम कारकों पर निर्भर करती है।	यह अर्जित कारकों के रूप में होती है।
यह योग्यता संस्कृतियुक्त, नई स्थितियों और गतिक–स्थितियों के अनुकूलता वाले परीक्षणों से प्राप्त होती है।	जबकि यह अर्जित सांस्कृतिक उपलब्धियों, कौशलताओं एवं नवीनतम स्थिति से संबंधित परीक्षणों में एक कारक के रूप में मापी जाती है।
फ्लूड सामान्य योग्यता को शरीर की वंशानुक्रम विभक्तता के रूप में लिया जा सकता है। यह जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं द्वारा संचालित होती है।	जबकि क्रिस्टलाइज्ड सामान्य योग्यता सामाजिक अधिगम और पर्यावरण प्रभावों से संचालित होती है।

❑ प्रमुख बुद्धि परीक्षण :

1. **वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण** : ऐसे बुद्धि परीक्षण जिन्हें हम एक समय पर एक ही व्यक्ति पर यदि प्रकाशित करते हैं तो उन्हें हम वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण के नाम से जानते हैं। ऐसे बुद्धि परीक्षण वाचिक (शाब्दिक) तथा अवाचिक (अशाब्दिक) हो सकते हैं परन्तु एक समय पर किसी एक व्यक्ति की जाँच हो सकती है, बहुत से व्यक्तियों के परीक्षण में समय अधिक लगता है। **उदाहरण** – ब्लॉक बिल्डिंग, भुल–भुलैया को खोजना, चित्र पूर्णता इत्यादि।

2. **सामूहिक बुद्धि परीक्षण** : सामूहिक बुद्धि परीक्षण जिनसे एक समय पर एक से अधिक व्यक्तियों की मानसिक योग्यता की जाँच हेतु परीक्षण किया जाता है।

○ प्रथम विश्व युद्ध के समय ऐसे परीक्षणों का काफी प्रचार व प्रसार हुआ था। उस समय आर्मी अल्फा नामक तथा आर्मी बीटा नामक परीक्षण तैयार किया गया था। इसमें प्रथम परीक्षण शिक्षित व्यक्तियों हेतु, द्वितीय परीक्षण अनपढ़ अथवा अशिक्षित व्यक्तियों हेतु बनाया गया था। इन परीक्षणों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह कम समय में अधिक व्यक्तियों की जाँच हेतु उपयोगी है।

3. **वाचिक बुद्धि परीक्षण (शाब्दिक परीक्षण)** : वाचिक बुद्धि परीक्षणों में अधिकाशंतया शब्दों एवं वाक्यों का उपयोग होता है, उन्हें हम वाचिक बुद्धि परीक्षण कहते हैं। हम इनका उपयोग वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों बुद्धि परीक्षणों के रूप में कर सकते हैं। इन बुद्धि परीक्षणों में एक प्रमुख बाधक तत्त्व यह है कि इनका प्रशासन छोटे बालकों, अनपढ़ व्यक्तियों तथा संबंधित भाषा जानने वाले व्यक्तियों पर नहीं कर सकते हैं। इसके प्रमुख उदाहरण मोहसिन एवं जोशी के परीक्षण है।

4. **अवाचिक बुद्धि परीक्षण (अशाब्दिक परीक्षण)** : अशाब्दिक अथवा अवाचिक बुद्धि परीक्षण जिनकी रचना में भाषा, शब्द व वाक्यों आदि का उपयोग नहीं किया जा सकता है, उन्हें हम अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण कहते हैं। 'निष्पादन बुद्धि परीक्षण' को भी हम अवाचिक बुद्धि परीक्षण के अन्तर्गत लिखते हैं। इनका उपयोग पढ़े लिखे व्यक्तियों के अलावा अनपढ़ व्यक्तियों गूँगे, बहरे व्यक्तियों पर भी किया जा सकता है।

5. **मिश्रित बुद्धि परीक्षण** : मिश्रित बुद्धि परीक्षण वे होते हैं, जिसके अन्तर्गत वाचिक एवं अवाचिक दोनों परीक्षणों की विशेषताएँ या गुण पाये जाते हैं।

6. **बुद्धि परीक्षण माला** : इसमें कुछ व्यक्तियों ने ऐसे बुद्धि परीक्षण बनाये हैं जिसके अन्तर्गत एक से अधिक परीक्षण सम्मिलित किये गये हैं। ऐसे परीक्षण को ही हम बुद्धि परीक्षण माला कहते हैं। उदाहरणार्थ – भाटिया बुद्धि परीक्षण माला।

❑ बुद्धि परीक्षणों का महत्व :

- बुद्धि परीक्षणों का सबसे प्रमुख महत्व यह है कि इसके द्वारा व्यक्ति मानसिक योग्यता को जान अथवा ज्ञात कर सकता है।
- बालकों व व्यक्तियों को उनकी क्षमतानुसार कार्य चुनने का सुझाव दिया जा सकता है।
- शिक्षण–प्रशिक्षण हेतु विद्यार्थियों का चयन कर सकते हैं।
- बालकों को शिक्षा देने के लिए बुद्धि परीक्षणों के माध्यम से उनकी योग्यता जान कर उचित माध्यम से उचित अथवा सही सलाह दी जा सकती है।
- विशेष प्रकार की शिक्षा (व्यावसायिक) के लिए सुयोग्य छात्र–छात्राओं का चयन किया जा सकता है।
- भविष्यवाणी करने के लिए उपयोगी है।
- इन परीक्षाओं के आधार पर बाल अपराधियों का पता लगाया जा सकता है और उन कारणों की जाँच की जा सकती है, जिनसे बालक अपराधी बन जाता है।
- बुद्धि–परीक्षाएँ मनुष्यों के कुछ विशिष्ट वर्गों के लिए बहुत उपयोगी है। जैसे–गूँगे, बहरे, अंधे आदि का सर्वेक्षण कराती है।

RAS मुख्य परीक्षा में आये हुए प्रश्न

प्रश्न – सामाजिक बुद्धि क्या है? (2016)

प्रश्न – सांवेगिक बुद्धि क्या है? (2018)

प्रश्न – गार्डनर के बहु–बुद्धि के सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए? (2018)

प्रश्न – संवेगात्मक बुद्धि से क्या आशय है? (2021)

प्रश्न – बुद्धि को परिभाषित करिये? (2021)

प्रश्न – भारतीय परम्परा में बुद्धि के पक्ष (पहलू) के रूप में पहचानी गई क्षमताओं के प्रकार कौन–से है? (2023)

प्रश्न – डेविड वेश्लर द्वारा प्रतिपादित बुद्धि को परिभाषित कीजिए? (2023)

***